Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan
JINENDER SONI
Founder, MISSION GYAN

बहुविकल्पी प्रश्न

1. ड्रमलिन का निर्माण किस भूआकृतिक कारक द्वारा होता है?

(अ) हिमनदी (ब) नदी
(स) पवन (द) भौम जल

2. भृगु और स्टैंक निम्न में से किस अपरदन कारक द्वारा निर्मित होते है ?

(अ) तरंग एवं धाराएँ (ब) हवा
(स) भूमिगत जल (द) हिमनद

3. सर्क झील बनती है ?

(अ) हिमनद के अपरदन द्वारा (ब) पवन के अपरदन द्वारा
(स) नदी के अपरदन द्वारा (द) भूमीगत जल के निक्षेपण से

4. मोनाडनोक क्या है?

(अ) अवरोधी चट्टानो के अवशेष (ब) अवनलिका
(स) क्षुद्र सरिताएं (द) सोपानी जलप्रपात

5. बालू का टिब्बा का निर्माण निम्नलिखित में से किससे संबंधित है?

(अ) समुद्री लहरें (ब) नदी
(स) हिमनदी (द) पवन

6. हिमानी धौत मैदान का निर्माण होता है–

(अ) पवन द्वारा (ब) नदी द्वारा
(स) भूमिगत जल द्वारा (द) हिमनद द्वारा

7. जलोढ़ पंख किन क्षेत्रों में बनते है ?

(अ) गिरिपद व मंद ढाल क्षेत्र में (ब) बाढ़ के मैदानों में
(स) तटीय क्षेत्रों में (द) पर्वतीय क्षेत्रों में

8. V-आकार की घाटी प्रवाहित जल की कौनसी अवस्था का परिणाम है ?

(अ) प्रोढ़ावस्था (ब) युवावस्था
(स) उपरोक्त तीनों में (द) वृद्धावस्था

9. गोखुर झीलों का निर्माण होता है?

(अ) हिमानी द्वारा (ब) भूमिगत जल द्वारा
(स) हिम नदी द्वारा (द) नदी द्वारा

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

10. गहरे, लम्बे व चौड़े गर्त जिनकी दीवार तीव्र ढाल वाली सीधी या अवतल होती है, क्या कहलाती है?

(अ) सर्क (ब) एस्कर

(स) हॉर्न (द) ड्रमलिन

रिक्त स्थान

11. बाढ़ के मैदान नदी _____ के मुख्य स्थलरूप है।

12. बाढ़ व डेल्टाई मैदानों पर लूप जैसे चैनल प्रारूप विकसित होते है, जिन्हें _____ कहा जाता है।

सत्य/असत्य

13. नदी की युवावस्था में V–आकार की घाटी का निर्माण होता है।

14. गॉर्ज निर्माण निक्षेपण प्रक्रिया से होता है।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

15. भूमिगत जल द्वारा बनने वाली स्थलाकृतियों के नाम बताइए।

16. साल्टेशन किसे कहते हैं?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

17. ड्रमलिन के बारे में व्याख्या करें।

18. भौम जल के निक्षेपित स्थलरूप के बारे में व्याख्या करें।

निबंधात्मक प्रश्न

19. नदी के ऊपरी भाग में निर्मित स्थलाकृतियों का वर्णन करें।

20. महासागरीय तरंग व धाराओं के अपरदित स्थलरूपों की व्याख्या करें।

HOTS

21. घाटी रंध्र अथवा युवाला का विकास कैसे होता है?

मिशन ज्ञान
पढ़ें: जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan
JINENDER SONI
Founder, MISSION GYAN

उत्तरमाला

1. (अ)
ड्रमलिन का निर्माण हिमनदी भूआकृतिक कारक द्वारा होता है। घर्षण से महीन तलछट का निर्माण होता है, जिसे हिमनद आटा कहते हैं।

2. (अ)
भृगु और स्टैंक तरंग एवं धाराओं के अपरदन कारक द्वारा निर्मित होते है।

3. (अ)
सर्क, हिमनद घाटियों के शीर्ष पर पाये जाते है। ये गहरे, लम्बे व चौडे गर्त है जो कि अवतल ढाल वाले होते है।

4. (अ)
जब नदी मैदानी भाग में बहती है तो नदी के द्वारा मैदान पूर्णताः समतल नहीं हो पाता है उसमे यत्र तत्र अवरोधी चट्टानों के अवशेष दिखाई देते हैं, जिन्हें मोनाडनोक कहते है।

5. (द)
बालू का टिब्बा का निर्माण पवन से संबंधित है। पवन द्वारा रेत एवं बालू के निक्षेप से निर्मित टीलों को बालुका स्तूप कहते हैं।

6. (द)
हिमानी धौत मैदान का निर्माण हिमनद द्वारा होता है।

7. (अ)
जब नदी पर्वतीय क्षेत्रों से निकलकर मैदानी भागो में प्रवेश करती है तो अपने साथ लाए हुए पदार्थों को गिरी पदीय क्षेत्र में पंख के आकार में जमा करती हुई आगे बढ़ जाती है।

8. (ब)
वी आकार की घाटी नदी की युवावस्था का परिणाम है।

9. (द)
गोखुर झीलों का निर्माण नदी द्वारा होता है, जब नदी मैदानी भाग में विसर्प रूप में होकर बहती है।

10. (अ)
गहरे, लम्बे व चौड़े गर्त जिनकी दीवार तीव्र ढाल वाली सीधी अवतल होती है, सर्क कहलाती है। यहाँ ढाल कम होने से अपरदन और निक्षेपण दोनों साथ-साथ होते रहते हैं।

11. निक्षेपण

12. विसर्प

13. सत्य

14. असत्य

15. भूमिगत जल द्वारा बनने वाली प्रमुख स्थलाकृति स्टैलेक्टाइट, स्टैलेग्माइट, युवाला, घोल रंध्र, लेपीस, कंदराएँ आदि हैं। भूमिगत जल द्वारा रासायनिक अपक्षय की क्रिया महत्वपूर्ण होती है और इससे संबधित स्थलाकृतियाँ चूना प्रधान क्षेत्रों में निर्मित होती हैं।

16. पवनों के वेग के अनुरूप मोटे आकार के कण धरातल के साथ घर्षण करते हुए चले आते हैं और अपने टकराने से अन्य कणों को ढीला कर देते हैं, उन्हें साल्टेशन कहते हैं। घर्षण (Friction) एक बल है जो दो तलों के बीच सापेक्षिक स्पर्शी गति का विरोध करता है।

मिशन ज्ञान
पढ़ें: जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

17. हिमनद के निक्षेप द्वारा निर्मित स्थलरुपों में ड्रमलीन गोलाश्म मृतिका द्वारा निर्मित एक प्रकार जे ढेर या टीले होते हैं, जिनका आकार उल्टी नाव या कटे हुए उल्टे अण्डे के समान होता हैं। ड्रमलीन, हिमनद मृत्तिका के अंडाकार समतल कटकनुमा स्थलरूप हैं, जिसमें रेत व बजरी के ढेर होते हैं। ड्रमलिन के लंबे भाग हिमनद के प्रवाह की दिशा के सामानांतर होते हैं। ये एक किलोमीटर लंबे व 30 मीटर तक ऊँचे होते हैं। ड्रमलीन का हिमनद सम्मुख भाग स्टॉस कहलाता है जो पृच्छ भागों की अपेक्षा तीव्र ढाल लिए होता है। ड्रमलिन का निर्माण हिमनद दरारों में भारी चट्टानी मलबे के भरने व उसके बर्फ के नीचे रहने से होता है। इसका अग्रभाग या स्टॉस भाग प्रवाहित हिमखड़ के कारण तीव्र हो जाता है। ड्रमलिन, हिमनद प्रवाह दिशा को बताते हैं।

18. चूने की शैलों के प्रदेश की कंदराओं में निक्षेपण प्रक्रिया से बनी प्रमुख स्थलाकृतियाँ निम्न हैं-

i. स्टैलेक्टाइट – चूना मिश्रित जल कंदराओं की छत से निरंतर बूंद-बूंद करके टपकता रहता है। छत से टपकने वाले जल का कुछ अंश भाप बनकर उड़ जाता है तथा यह क्रिया निरंतर चलती रहती है और एक स्तंभ-सा नीचे की ओर बन जाता है। इन सुंदर रचनाओं को स्टैलेक्टाइट कहते हैं। स्टैलेक्टाइट एवं स्टैलेग्माइट में कैल्सियम कार्बोनेट का निक्षेपण होता है।

ii. स्टैलेग्माइट – स्टैलेक्टाइट के विपरीत चुने का जमाव जब फर्श पर हो तो इसे स्टैलेग्माइट कहते है।

iii. स्तंभ – विभिन्न मोटाई के स्टैलेक्टाइट तथा स्टैलेग्माइट के मिलने से स्तंभ और कंदरा स्तंभ बनते हैं।

19. नदी के ऊपरी या पर्वतीय भाग का प्रारंभ पर्वतीय क्षेत्र में नदी के उद्गम से होता है। इस भाग में नदी खड़े ढालों पर तेज गति से बहती है। अतः नदी के इस भाग में अपरदन की क्रिया सबसे अधिक होती है। नदी इस भाग में निम्नलिखित स्थलाकृतियों का निर्माण करती है-

i. V आकार की घाटी – वी आकार की घाटी का नामकरण अंग्रेजी वर्णमाला के "V" अक्षर के आधार पर किया गया हैं। यह स्थलाकृति साधारणतया उन क्षेत्रों में बनती है, जहाँ वर्षा पर्याप्त मात्रा में होती है और चट्टानें अधिक कठोर नहीं होतीं। ऐसे क्षेत्रों में लम्बवत कटाव तथा पार्श्विक कटाव साथ-साथ होता रहता है, जिससे अंग्रेजी के अक्षर V के आकार की घाटी का निर्माण होता है।

ii. महाखड्डु या कैनियन – महाखड्डु' या गार्ज "वी" आकार की घाटी का ही विशिष्ट रूप हैं। इसके पार्श्व तीव्र तथा खडी दीवार के समान होते हैं। इनकी रचना प्रायः कठोर शैलों युक्त क्षेत्र में होती हैं।
नदी दो कठोर चट्टानों के बीच खड़ी ढाल या I आकार के खड्ड का निर्माण करती है, जिसे महाखड्ड या कैनियन कहते हैं।

iii. जलप्रपात – जब नदी पर्वतीय भागों में ऊँचे स्थान से खड्डे में गिरने लगती है, तो उसे जलप्रपात कहा जाता है।

iv . क्षिप्रिकाएँ – भिन्न-भिन्न कठोरता वाली शैलों की उपस्थिति के कारण नदी का तल असमतल हो जाता है, जिसे क्षिप्रिकाएँ कहा जाता है।

v. जलज गर्तिका – नदी की तलहटी में जब कभी कोई कोमल चट्टान आती है तो उसका अपरदन हो जाता है और वहाँ पर एक छोटा-सा गर्त बन जाता है।
नदी का जल इस गर्त में भँवर के समान घूमने लगता है और एक प्रकार के छेदक का कार्य करता है। इस प्रकार नदी के जल में उपस्थित तलछट इस गर्त की दीवारों तथा तल का अपरदन करते रहते हैं और यह गर्त गहरा तथा चौड़ा हो जाता है। नदी की तलहटी पर जल द्वारा बने इस गर्त को जलज गर्तिका कहते हैं।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

20. ऐसे तट जहाँ अपरदन प्रमुख प्रक्रिया है, वहाँ प्रायः निम्न मुख्य आकृतियाँ तरंग घर्षित भृगु, वेदिकाएँ तथा समुद्री स्टैंक पाए जाते हैं।

- **तरंग घर्षित भृगु –** लगभग सभी समुद्र भृगु की ढाल तीव्र होती है जो कुछ मीटर से लेकर 30 मीटर या उससे अधिक हो सकती है। इनकी तलहटी पर मंद ढाल वाला या समतल प्लेटफार्म होता है, जो समुद्री भृगु से प्राप्त शैल मलबे से ढका होता है।
- **वेदिकाएँ –** नदी घाटी के दोनों पाश्र्वो पर पाई जाने वाली वेदिकाओं को नदी वेदिकाएँ कहते हैं। ये प्रारंभिक बाढ़ मैदानों अथवा पुरानी नदी घाटियों के तलों के चिह्न होते हैं। ये मुख्यतः अपरदित भू-आकृतियाँ हैं जो बाढ़ के कारण बनती है।
- **समुद्री स्टैक –** तट के नजदीक समुद्र तल से उभरा चट्टान का खंभा या अलग-थलग पड़ा छोटा-सा द्वीप स्टैक कहलाता है।

कंदराओं की छत ध्वस्त होने से समुद्री भृगु स्थल की ओर हटते हैं। भृगु के निवर्तन से चट्टानों के कुछ अवशेष तटों पर अलग-थलग छूट जाते हैं। ऐसी अलग-अलग प्रतिरोधी चट्टानें जो कभी भृगु के भाग थे, समुद्री स्टैक कहलाते हैं। अन्य स्थलरूपों की भाँति समुद्री स्टैक भी अस्थायी आकृतियाँ हैं तो तरंग अपरदन द्वारा समुद्री पहाड़ियों व भृगु की भाँति धीरे-धीरे तंग समुद्री मैदानों में परिवर्तित हो जाते हैं और स्थल से प्रवाहित जलोढ़ से अच्छादित रेत व शिंगिल चौड़े पुलिन में परिवर्तित हो जाते हैं।

21. घाटी रंध्र तथा युवाला का विकास सामान्यतः धरातलीय प्रवाहित जल घोल रंध्री व विलयन रंध्रों से गुजरता हुआ अन्तभौमि नदी के रूप में विलीन हो जाता है तथा फिर कुछ दूरी के बाद किसी कंदरा से भूमिगत नदी के रूप में फिर निकल आता है। जब घोल रंध्र और डोलाइन इन कंदराओं की छत के गिरने से या पदार्थों के स्खलन के माध्यम से आपस में मिल जाते हैं तो लंबी तंग और विस्तृत खाइयाँ बनती हैं, जिन्हें घाटी रंध्र या युवाला कहते हैं।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES